Oct 18, 2024

सर्व खज़ानों से सम्पन्न अपने चेहरे वा चलन से अलौकिकता का साक्षात्कार कराओ

1. अभी बापदादा की यही दिल की आश है कि खज़ाने मिले तो हैं लेकिन अब समय सिर्फ वर्णन करने का नहीं है लेकिन आपका चेहरा और चलन प्रत्यक्ष अनुभव कराये कि यह आत्मायें कोई विशेष हैं, न्यारे हैं और परमात्म प्यारे हैं
2. कई बच्चे समझते हैं कि एक दो मिनट अगर और कुछ सोच लिया, तो 2 मिनट ही तो हैं। लेकिन जितना समय का महत्व है उस अनुसार तो 2 मिनट नहीं, 2 मास भी नहीं, दो वर्ष के समान हैं। इतना महत्व है संगम के समय का।
3. आप सभी से इन्डिया वाले बच्चों का इतना प्यार है जो पहला चांस आपको ही देते हैं। तो पहले चांस का रिजल्ट पहला नम्बर लेना है।
4. बापदादा ने पहले से ही कहा है कि अचानक क्या भी हो सकता है इसलिए सन्देश देने का वा अपने प्रोग्रेस का अभी-अभी, कभी-कभी नहीं। संकल्प किया करना ही है। देखेंगे, करेंगे, यह गे-गे का शब्द ही नहीं है। जो समझते हैं कि अभी-अभी करके दिखाने वाले हैं, वह हाथ उठाओ। करना ही है। करना ही है। करेंगे नहीं, करना ही है।
5. याद रखना, अपने आपही अपना चार्ट रखना और बापदादा ने पहले ही सुनाया है कि हर रात्रि को बापदादा को अपने सारे दिन का चार्ट सुनाने के बाद अपना दिमाग खाली करके सोने से आपको नींद भी अच्छी आयेगी और साथ में रोज़ का हालचाल देने से दूसरे दिन याद रहता है कि बाबा को हमने अपना कहा है, तो वह स्मृति सहयोग देती है। धर्मराजपुरी के लिए जाना नहीं पड़ेगा। दे दिया ना और परिवर्तन कर लिया तो धर्मराजपुरी से बच जायेंगे।
6. डबल पुरूषार्थी का टाइटिल बापदादा ने जो दिया है, उसको सदा याद रखना।
7. अभी इस वर्ष में विशेष कौन सी बात प्रैक्टिकल में करनी है, वह सुना दिया कि अभी चेहरे में चमक दिखाई दे, जो भी देखे, प्रत्यक्षता के निमित्त बनना है, बाप को प्रत्यक्ष करना है तो क्या करना है? सदा मुस्कराता हुआ चेहरा, कोई चिंतन में, कोई उलझन में नहीं।
8. बापदादा ने सुनाया था कि अभी दो शब्द याद करो माया को इशारा करो गेट आउट और अपने को गेस्ट हाउस में अनुभव करो। यह दुनिया आपकी नहीं है, गेस्ट हाउस है, अब तो घर जाना ही है। घर के

नजारे मन में बुद्धि में दिखाई दें। बेहद का वैराग्य, गेस्ट हाउस में दिल नहीं लगती। जाना है, जाना है, याद रहता है।

9. अभी लक्ष्य रखो बेहद के वैरागी और हिम्मत उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते रहो और उड़ाते रहो। अभी उड़ने का समय है, पंख अपने सदा चेक करो कमज़ोर तो नहीं हो रहे हैं!
10. बापदादा अभी क्या देखने चाहते हैं? हर बच्चा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण, सर्व खज़ानों से सम्पन्न और हर श्रीमत जो मिलती रही है, उसमें सम्पूर्ण।

Nov 15, 2024

बाप के स्नेह में समाते हुए, शक्तियों द्वारा मन को कन्ट्रोल कर सदा मनजीत, जगतजीत बनो

1. बापदादा हर बच्चे को आज सदा मन का मालिक, मनजीत जगतजीत बनाने चाहते हैं। मन मेरा है, मेरे का मालिक हूँ, जैसे चाहूँ मालिक बन मन को चलाना इससे खुश रहेंगे। जैसे इन हाथ पांव को आर्डर में चलाते हो क्योंकि मेरा है, ऐसे मन को भी शक्ति स्वरूप हो चला सकते हो लेकिन मालिक बन चलाना तो मनजीत जगतजीत बन जायेंगे।
2. सदा शक्ति स्वरूप आत्मा बन इन कर्मेन्द्रियों को चलाने वाले मास्टर बन, मनजीत जगतजीत बन, सदा खुश रहना और खुशी बांटना क्योंकि आज विश्व की आत्मायें अपने-अपने कार्य करते हुए खुशी के बजाए अनेक सरकमस्टांश में अपने को मजबूर समझती हैं। मजबूर को मजबूत करो। खुशी बांटो।
3. एक-एक अनेक आत्माओं को परिचय दे इस भारत को जैसे भारत ऊंचा था, वैसे बनाना है।
4. (कर्नाटक) सदा खुशी-खुशी से कर्नाटक में सभी भाई बहिनों को परमात्म सन्देश जरूर पहुंचाओ। कोई रह नहीं जाये।
5. (डबल विदेशी) जहाँ जो भी हैं वह अटेन्शन देके टेन्शन फ्री रहते हैं। एक बाप दूसरा न कोई, इस पुरुषार्थ में अटेन्शन है और अटेन्शन टेन्शन को समाप्त कर रहा है।
6. मन के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर व्यर्थ को विदाई दे दो, नहीं तो व्यर्थ संकल्प भी समय निकाल देते हैं।
7. सभी को यही लक्ष्य रखना है कि स्वयं भी शक्तिशाली बन औरों को भी बापदादा का परिचय दे वारिस बनाने की सेवा करेंगे। वारिस क्वालिटी अर्थात् जो सदा बाप के साथी बन खुद भी चले और अनेकों

को भी बाप के साथी बनावे। कोई आपको उल्हना नहीं देवे। आपने तो हमें बताया नहीं। अपना उल्हना जरूर उतारो।

8. समय पर कोई भरोसा नहीं, कुछ भी होना है, अचानक होना है। यह अचानक की बात सभी को ध्यान में रखनी है।

Nov 30, 2024

समय की समीपता प्रमाण स्वयं को हद के बन्धनों से मुक्त कर सम्पन्न और समान बनो।

1. समान बच्चों की विशेषता है - वह सदा निर्विघ्न, निर्विकल्प, निर्मान और निर्मल होंगे। ऐसी आत्मायें सदा स्वतंत्र होती हैं, किसी भी प्रकार के हद के बन्धन में बंधायमान नहीं होती। तो अपने आप से पूछो ऐसी बेहद की स्वतंत्र आत्मा बने हैं!
2. चेक करो - कोई भी छोटी सी कर्मेन्द्रिय बन्धन में तो नहीं बांधती? अपना स्वमान याद करो - मास्टर सर्वशक्तिवान, त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री, स्वदर्शन चक्रधारी, उसी स्वमान के आधार पर क्या सर्वशक्तिवान के बच्चे को कोई कर्मेन्द्रिय आकर्षित कर सकती है?
3. समय की समीपता को देखते अपने को देखो - सेकण्ड में सर्व बन्धनों से मुक्त हो सकते हो? कोई भी ऐसा बन्धन रहा हुआ तो नहीं है? क्योंकि लास्ट पेपर में नम्बरवन होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है, सेकण्ड में जहाँ, जैसे मन-बुद्धि को लगाने चाहो वहाँ सेकण्ड में लग जाये। हलचल में नहीं आये।
4. एक सेकण्ड का आर्डर हो अशरीरी बन जाओ, बन जायेंगे ना! कि युद्ध करनी पड़ेगी? यह अभ्यास बहुतकाल का ही अन्त में सहयोगी बनेगा। बापदादा यही इशारा देते हैं कि सारे दिन में कर्म करते हुए भी बार-बार यह अभ्यास करते रहो। इसके लिए मन के कन्ट्रोलिंग पावर की आवश्यकता है। अगर मन कन्ट्रोल में आ गया तो कोई भी कर्मेन्द्रिय वशीभूत नहीं कर सकती।
5. आप सब तो मेहनत से मुक्त हो गये हो ना! कि अभी भी मेहनत करनी पड़ती है? सुनाया था - मेहनत से मुक्त होने का सहज साधन है - दिल से बाप के अति स्नेही बन जाना।
6. आप ब्राह्मण आत्माओं का जन्म का वायदा है, याद है वायदा? एक बाप दूसरा न कोई।
7. कोई-कोई बच्चे कहते हैं, रूहरिहान करते हैं ना तो कहते हैं मेरा मन परेशान रहता है, मेरा मन आया कहाँ से? तेरे में मेरा नहीं करो।

8. खजानों को सदा स्व प्रति और सर्व आत्माओं के प्रति कार्य में लगाओ। जितना कार्य में लगायेंगे उतना ही खजाना बढ़ता जायेगा। सर्वशक्तियों का खजाना, सर्व शक्तियां कार्य में लगाओ। सिर्फ बुद्धि में नॉलेज नहीं रखो मैं सर्वशक्तिवान हूँ, लेकिन सर्व शक्तियों को समय प्रमाण कार्य में लगाओ और सेवा में लगाओ।
9. बापदादा ने मैजॉरिटी बच्चों के पोतामेल में देखा है दो शक्तियां अगर सदा याद रहें और कार्य में समय पर लगाओ तो सदा ही निर्विघ्न रहो - सहनशक्ति और रियलाइजेशन की शक्ति। रियलाइज करते भी हो लेकिन उसको प्रैक्टिकल में स्वरूप में लाने में अटेन्शन कम है।
10. कहाँ-कहाँ वायुमण्डल कमजोर भी होता है, उसका असर जल्दी पड़ जाता है। फिर उन्हों की भाषा बतायें क्या होती है? यह तो चलता है, यह तो होता है... यह अलबेलापन लाता है। उस समय इस भाषा को परिवर्तन करो, सोचो कि बाप का फरमान क्या है? बाप की पसन्दी क्या है? बाप किस बात को पसन्द करता है? बाप ने यह कहा है? किया है? अगर बाप याद आ गया तो अलबेलापन समाप्त हो, उमंग-उत्साह आ जायेगा।
11. बापदादा यही चाहते हैं कि समय से पहले सब एवररेडी बन जाओ।
12. (**यू.पी./बनारस**) बहुत अच्छा किया है, चांस लिया है। अभी नवीनता, दूसरे बारी कोई नवीनता लेके ही आना।
13. कोई भी ज़ोन कोई नया प्लैन बनाके आये, उसको बापदादा एक्स्ट्रा स्नेह शक्ति का वरदान देंगे।
14. (**डबल विदेशी**) जो परिवर्तन का संकल्प लेते हो और अच्छा उमंग-उत्साह, हिम्मत से लेते हो, सिर्फ इसको अण्डरलाइन करते जाओ, करना ही है। बदलना ही है। बदलकर विश्व को बदलना है।
15. अगर अन्त में पास होना है तो यह अशरीरी भव की ड्रिल बहुत आवश्यक है। कोई आकर्षण आकर्षित नहीं करे।

Dec 15, 2024

बापदादा की विशेष आशा - हर एक बच्चा दुआयें दे और दुआयें ले

1. रूहानी फ़खुर में रहते हो इसलिए बेफिक्र बादशाह हो।
2. सवेरे उठते हैं तो भी बेफिक्र, चलते फिरते, कर्म करते भी बेफिक्र और सोते हो तो भी बेफिक्र नींद में सोते हो। ऐसे अनुभव करते हो ना!

3. बेफिक्र और बादशाह हो, स्वराज्य अधिकारी इन कर्मेन्द्रियों के ऊपर राज्य करने वाले बेफिक्र बादशाह हो अर्थात् स्वराज्य अधिकारी हो।
4. कोई फिक्र है? है कोई फिक्र? क्योंकि अपने सारे फिकर बाप को दे दिये हैं। तो बोझ उतर गया ना! फिकर खत्म और बेफिक्र बादशाह बन अमूल्य जीवन अनुभव कर रहे हो।
5. बेफिक्र बादशाह की निशानी है - सदा स्वयं भी सन्तुष्ट और औरों को भी सन्तुष्ट करने वाले। चेक करो - सदा सर्व प्राप्ति स्वरूप, सन्तुष्ट हैं?
6. बेफिक्र बनने की विधि बहुत सहज है, मुश्किल नहीं है। सिर्फ एक शब्द की मात्रा का थोड़ा सा अन्तर है। वह शब्द है - मेरे को तेरे में परिवर्तन करो। मेरा नहीं तेरा। मेरे को तेरे में परिवर्तन कर लिया? नहीं किया हो तो कर लो।
7. अगर अभी भी कहाँ कोने में कोई फिकर रख दिया हो तो दे दो। अपने पास बोझ क्यों रखते हो? जब बाप कहते हैं बोझ मेरे को दे दो, आप लाइट हो जाओ, डबल लाइट।
8. अमृतवेले जब उठो तो चेक करना कि विशेष वर्तमान समय सबकान्सेस में भी कोई बोझ तो नहीं है? सबकान्सेस तो क्या स्वप्न मात्र भी बोझ का अनुभव नहीं हो। तो विशेष यह होम वर्क दे रहे हैं, अमृतवेले चेक करना। लेकिन चेक के साथ, सिर्फ चेक नहीं करना चेंज भी करना। मेरे को तेरे में चेंज कर देना।
9. समय की रफ्तार भी देखो और स्वयं की रफ्तार भी देखो। अब चलना नहीं है, करना नहीं है, उड़ना है। अभी उड़ने की रफ्तार चाहिए।
10. प्यार वाले बच्चों की बाप मेहनत नहीं देख सकते। मुहब्बत में रहो तो मेहनत समाप्त हो जायेगी।
11. बादशाह हैं? तख्त नहीं छोड़ना। देह भान में आये अर्थात् मिट्टी में आ गये। यह देह मिट्टी है। तख्त नशीन बने तो बादशाह बने।
12. संकल्प भी खज़ाना है, तो वर्तमान समय भी बहुत बड़ा खज़ाना है क्योंकि वर्तमान समय में जो कुछ प्राप्त करने चाहे, जो वरदान लेने चाहें, जितना अपने को श्रेष्ठ बनाने चाहे, उतना अभी बना सकते हैं। अब नहीं तो कब नहीं।
13. जैसे संकल्प के खज़ाने को व्यर्थ गंवाना अर्थात् अपने प्राप्तियों को गंवाना। ऐसे ही समय के एक सेकण्ड को भी व्यर्थ गंवाया, सफल नहीं किया तो बहुत गंवाया।

14. सबसे सहज है पुरुषार्थ में "दुआयें दो और दुआयें लो।" सुख दो और सुख लो, न दु:ख दो न दु:ख लो। ऐसे नहीं कि दु:ख दिया नहीं लेकिन ले लो तो भी दु:खी तो होंगे ना! तो दुआयें दो, सुख दो और सुख लो।
15. दुआयें लेते जाओ दुआयें देते जाओ, सम्पन्न हो जायेंगे। बापदादा की यही आशा है कि हर बच्चा दुआयें देता रहे। दुआओं का खजाना जितना जमा कर सको उतना करते जाओ क्योंकि इस समय जितनी दुआयें इकट्ठी करेंगे, जमा करेंगे उतना ही जब आप पूज्य बनेंगे तो आत्माओं को दुआयें दे सकेंगे।
16. अगर बद-दुआ मानों ले लिया तो आपके अन्दर स्वच्छता रही? अगर ज़रा भी डिफेक्ट रहा तो परफेक्ट नहीं बन सकते। अपने दिल में दृढ़ संकल्प करो, अभी भी किसकी बद-दुआ मन में हो तो निकाल दो और कल से दुआ देंगे, दुआ लेंगे। अभी करना ही है। कुछ भी हो जाए, हिम्मत रखो। दृढ़ संकल्प रखो।
17. अगर मानों कभी बद-दुआ का प्रभाव पड़ भी जावे ना तो 10 गुणा दुआयें ज्यादा दे करके उसको खत्म कर देना। एक बद-दुआ के प्रभाव को 10 गुणा दुआयें देके हल्का कर देना फिर हिम्मत आ जायेगी। नुकसान तो अपने को होता है ना।
18. (**दिल्ली/अगारा)** यज्ञ सेवा का चांस मिला है। यज्ञ सेवा का फल बहुत बड़ा है क्योंकि यज्ञ सेवा अर्थात् ब्राह्मण आत्माओं की सेवा।
19. (**डबल विदेशी)** चलना नहीं, दौड़ना नहीं, हाई जम्प नहीं देना, उड़ना। उड़ने वाले।

Dec 31, 2024

इस वर्ष के आरम्भ से बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज करो, यही मुक्तिधाम के गेट की चाबी है

1. नवयुग तो आप संगम पर सदा मनाते रहते।बस आज संगम पर हैं, कल अपने नवयुग में राज्य अधिकारी बन राज्य करेंगे। इतना नजदीक अनुभव हो रहा है? अपने नव युग की, गोल्डन युग की गोल्डन ड्रेस सामने दिखाई दे रही है? कितनी सुन्दर है! स्पष्ट दिखाई दे रही है ना!
2. दुनिया की हालतों को देखते हुए अब अपने विशेष दो स्वरूपों को इमर्ज करो, वह दो स्वरूप हैं - एक सर्व प्रति रहमदिल और कल्याणकारी और दूसरा हर आत्मा के प्रति सदा दाता के बच्चे मास्टर दाता।

3. हे दाता के बच्चे अपने श्रेष्ठ संकल्प द्वारा, मन्सा शक्ति द्वारा, चाहे वाणी द्वारा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा, चाहे शुभ भावना शुभ कामना द्वारा, चाहे वायब्रेशन वायुमण्डल द्वारा किसी भी युक्ति से मुक्ति दिलाओ। चिल्ला रहे हैं मुक्ति दो, बापदादा अपने राइट हैण्डस को कहते हैं रहम करो।
4. तो बापदादा के आप हैण्डस हो ना, हाथ हो ना। तो बापदादा राइट हैण्डस से पूछते हैं, कितनी परसेन्ट का कल्याण किया है? कितनी परसेन्ट का किया है? सुनाओ, हिसाब निकालो। इसीलिए बापदादा कहते हैं अब स्व-पुरुषार्थ और सेवा के भिन्न-भिन्न विधियों द्वारा पुरुषार्थ तीव्र करो।
5. स्व की स्थिति में भी चार बातें विशेष चेक करो - इसको कहेंगे तीव्र पुरुषार्थ। एक बात - पहले यह चेक करो कि निमित्त भाव है? कोई भी रॉयल रूप का मैं पन तो नहीं है? मेरापन तो नहीं है? हर बात में निमित्त हैं। चाहे सेवा में, चाहे स्थिति में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में चेहरा और चलन निमित्त भाव का हो। और उसकी दूसरी विशेषता होगी - निर्मान भावना। निमित्त और निर्मान भाव से निर्माण करना। तो तीन बातें सुनी - निमित्त, निर्मान और निर्माण और चौथी बात है - निर्वाण। तो यह चार बातें अच्छी परसेन्ट में प्रैक्टिकल जीवन में होना अर्थात् तीव्र पुरुषार्थी।
6. जब चाहे निर्वाणधाम में पहुंच जायें। निर्वाण स्थिति में स्थित हो जाएं क्योंकि स्वयं निर्वाण स्थिति में होंगे तब दूसरों को निर्वाणधाम में पहुंचा सकेंगे।
7. अभी तो दाता बनो, रहमदिल बनो। यह तब होगा, रहम तब आयेगा जब इस वर्ष के आरम्भ से अपने में बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज करो। बेहद की वैराग्य वृत्ति। यह देह की, देहभान की स्मृति, यह भी बेहद के वैराग्य की कमी है। छोटी-छोटी हद की बातें स्थिति को डगमग करती हैं, कारण? बेहद की वैराग्य वृत्ति कम है, लगाव है। जब बिल्कुल बेहद के वैरागी बन जायेंगे, वृत्ति में भी वैरागी, दृष्टि में भी बेहद के वैरागी, सम्बन्ध-सम्पर्क में, सेवा में सबमें बेहद के वैरागी... तभी मुक्तिधाम का दरवाजा खुलेगा।
8. अभी बेहद के वैराग्य की, मुक्तिधाम जाने की चाबी तैयार करो। ब्रह्मा बाप से वायदा किया है - साथ चलेंगे, साथ आयेंगे, साथ में राज्य करेंगे, साथ में भक्ति करेंगे...। तो अभी तैयारी करो, इस वर्ष में करेंगे कि दूसरा वर्ष चाहिए? जो समझते हैं इस वर्ष में अटेन्शन प्लीज, बार-बार करेंगे वह हाथ उठाओ। करेंगे?
9. हर सेकण्ड को, हर संकल्प को, हर बोल को, हर कदम को, हर वस्तु को सफल करो और सफल कराओ। 12 बजे के बाद इस नये वर्ष में बापदादा की तरफ से पहला वरदान अपने को देना - सफलता भव। संकल्प भी असफल नहीं हो क्योंकि आपका एक शुभ संकल्प विश्व का कल्याण करने वाला है। इतना अमूल्य है।

10. बस यह चेक करो सेकण्ड जो बीता, संकल्प जो चला, सफल हुआ? तो सभी आज मैजारिटी पट पर बैठे हैं।
11. अभी-अभी एक सेकण्ड में बिन्दु बन बिन्दु बाप को याद करो और जो भी कोई बातें हों उसको बिन्दु लगाओ। लगा सकते हो? बस एक सेकण्ड में "मैं बाबा का, बाबा मेरा।"
12. (**महाराष्ट्र)** किसी को भी पुण्य का खाता जमा करना सहज है, योगबल से तो होता ही है लेकिन यह कर्म करते भी अगर पुण्य का खाता जमा करना है तो कर्मयोगी स्थिति में यज्ञ सेवा करो तो आपका खाता भरपूर हो ही जायेगा।

Jan 18, 2025

सदा शुभचिंतक बनो , शुभचिंतन करो , शुभ वृत्ति से शुभ वायुमण्डल बनाओ तथा जीरो और हीरो की स्मृति में रहो

1. ज्ञानी तू आत्मा बच्चे तो हैं लेकिन स्नेह की सबजेक्ट आवश्यक है क्योंकि स्नेही मेहनत कम और मुहब्बत के अनुभव में सहज रहते हैं।
2. मेरा बाबा कहा, दिल के स्नेह से और सर्व खजानों की चाबी मिल जाती है। तो दोनों, बापदादा ऐसे स्नेही, जिनके आगे बापदादा भी हज़ूर हाज़िर हो जाता है।
3. सदाकाल के लिए तूफान को तोहफा बनाए, समस्या को समाधान रूप दे आगे बढ़ते चलो।
4. जीरो याद दिलाता कि मैं हीरो, सच्चा हीरो, महान हीरो हूँ और हीरो पार्टधारी बन हर कार्य हीरो समान करना है।
5. कुछ भी पेपर आवे लेकिन चार बातें अपने जीवन में करनी ही है। पक्का? पक्का? पक्का?
    5.1. सदा शुभचिंतक, कोई की कमजोरी देख वा सुन रहमदिल बन शुभ चिंतक बन उनको सहयोग देना ही है। सहारे दाता, रहमदिल बन सहयोग दो। उससे किनारा या घृणा नहीं करना, क्षमा करना।
    5.2. दूसरा है शुभ चिंतन। कभी-कभी व्यर्थ संकल्प बहुत चलता है, इसमें अपनी जमा हुई शक्तियां व्यर्थ चली जाती हैं, इसलिए शुभ चिंतन के लिए स्वमान का कोई न कोई अपना टाइटिल मन को होमवर्क दे दो, मन का टाइमटेबल बनाओ।
    5.3. तीसरा है - शुभ वृत्ति। अशुभ वृत्ति वायुमण्डल भी अशुद्ध फैलाती है इसीलिए शुभ वृत्ति।
    5.4. चौथा है हर एक को यह जिम्मेवारी लेनी है कि मुझे, मेरा काम है खास, दूसरे को नहीं देखना है, मेरा काम है शुभ वायुमण्डल बनाना। दृढ़ संकल्प करना है मुझे शुभ वायुमण्डल बनाना ही है। सारे विश्व

का, प्रकृति का, आत्माओं का, आत्माओं में ब्राह्मण आत्मायें भी आ जाती हैं, हर एक अपने सेवास्थान का ऐसा वायुमण्डल दृढ़ता से बनाओ, कुछ त्याग करना पड़े तो कर लो, यह त्याग करे तो मैं करूं, नहीं। सिस्टम ठीक हो तो... तो तो नहीं करो। मुझे तो करना ही है। विश्व परिवर्तक हूँ, यह स्वमान है ना! ऐसे गांव-गांव का सेन्टर, बड़ा सेन्टर सभी का वायुमण्डल चैतन्य मन्दिर हो। निगेटिव को पॉजिटिव बनाना इसमें पहले मैं।

6. आज चारों ओर भय फैला हुआ है। तो परिवर्तन करने में पहले मैं निमित्त बनूंगा, यह संकल्प कौन करता है? इसमें हाथ उठाओ। करना पड़ेगा, करना पड़ेगा। बदलना पड़ेगा। रक्षक बनना पड़ेगा। कुछ छोड़ना पड़ेगा और प्यार लेना पड़ेगा। मन का हाथ उठाया या यह हाथ उठाया? क्योंकि मन बदला तो विश्व बदला।
7. तो इस वर्ष में क्या स्लोगन होगा? "नो प्राबलम"।
   दाता के बच्चे हो तो जो भी आवे हर एक को कोई न कोई गुण की गिफ्ट दो। कोई भी सामने आये उसको खाली हाथ नहीं भेजना, कोई न कोई गुण की, चेहरे से, चलन से, मुख से गुण की सौगात के बिना नहीं मिलना।
8. दे दान छूटे ग्रहण।
9. (**पंजाब)** अपना खुशनसीब का टाइटिल सदा याद रखना क्योंकि बाप मिला अर्थात् सर्व प्राप्तियों का भण्डार मिला। तो कहावत है भण्डारा भरपूर, सब दु:ख दूर तो क्या करेंगे! खुश ही रहेंगे ना!

Feb 2, 2025

स्नेह और सहयोग की रूपरेखा स्टेज पर लाओ, हर एक को गुण और शक्तियों की गिफ्ट दो

1. परमात्म प्यार ही जीवन में सदा साथ भी देता और साथी बन सदा सहयोगी रहता। जहाँ प्यार है, साथ है वहाँ सब कुछ बहुत सहज और सरल हो जाता है। मेहनत का अनुभव नहीं होता है। ऐसा अनुभव है ना! अगर मेहनत करनी पड़ती है तो प्यार की परसेन्टेज कम है।
2. दो बातों की लीकेज महेनत कराती है - एक पुराने संसार का आकर्षण्। संसार में सम्बन्ध, पदार्थ सब आ जाता है। और दूसरा- पुराने संस्कार की आकर्षण। चेक करो - इन दोनों लीकेज से मुक्त हैं?
3. परमात्म प्यारे कोइ भी व्यक्ति वा साधनों की आकर्षण में नहीं आ सकते क्योंकि परमात्म आकर्षण, परमात्म प्यार ऐसा अनुभव कराता जो सदा प्यार के कारण लवलीन रहते हैं।

4. अपने आपसे पूछो लवली तो सभी हैं, लेकिन लवलीन कहाँ तक रहते हैं? लवलीन बच्चों की निशानी है वह सदा परमात्म फरमान में सहज चलते हैं। सबसे पहला फरमान है - योगी भव, पवित्र भव।
5. किसी भी बच्चे से पूछो तो एक ही उत्तर देते हैं लक्ष्य है बाप समान बनने का। जैसे ब्रह्मा बाप हर बच्चे के प्रति सहयोगी बनें, स्नेही बनें, ऐसे सर्व के सदा स्नेही और सहयोगी। इसको कहा जाता है समान बनना।
6. सर्व बेहद के ब्राह्मण परिवार के बीच एक दो के प्रति अपने शुभभावना, श्रेष्ठ कामना द्वारा हरेक एक दो के परिवर्तन करने में सहयोगी बनो, चाहे कमज़ोर है, जानते हो इसके संस्कार में यह कमज़ोरी है लेकिन आप स्नेह और सहयोग की शक्ति द्वारा सहयोगी बनो। एक दो को सहयोग का हाथ मिलाओ।
7. शिक्षा नहीं दो, स्नेह भरा सहयोग दो।
8. न्यारा नहीं बनो, किनारा नहीं करो, सहारा बनो क्योंकि आपका यादगार विजयमाला है।
9. महादानी बनो, अपने गुणों का सहयोगी बनो, बनाओ। ऐसे अपने गुणों का, हैं तो परमात्म गुण लेकिन जो अपने में बनाया है, उस गुण की शक्ति से उन्हों की कमज़ोरी दूर करो।
10. आपका टाइटिल ही है - मास्टर सर्वशक्तिवान। तो सर्वशक्तिवान का कर्तव्य क्या है? शक्ति की लेन-देन करना। बाप द्वारा मिला हुआ गुण आपस में लेन-देन करो।
11. अगर कल्याण की भावना रखेंगे तो जैसे भाषण करके सन्देश देते हो ना, वाणी द्वारा वैसे अपने कल्याण की भावना द्वारा, कल्याण की वृत्ति द्वारा, कल्याण के वायुमण्डल द्वारा यह गुणों की गिफ्ट दो, शक्तियों की गिफ्ट दो।
12. कमज़ोर को सहयोग देना, यह समय पर गिफ्ट देना है, गिरे हुए को गिराओ नहीं, चढ़ाओ, ऊँचा चढ़ाओ। यह ऐसा है, यह ऐसा है..., नहीं। यह प्रभु प्यार के पात्र है, कोटों में कोई आत्मा है, विशेष आत्मा है, विजयी बनने वाली आत्मा है, यह दृष्टि रखो। अभी वृत्ति, दृष्टि, वायुमण्डल चेंज करो।
13. कमज़ोरी देखते, देखो नहीं, उमंग दो, सहयोग दो। ऐसा ब्राह्मण संगठन तैयार करो तो बापदादा विजय की ताली बजायेगा।
14. सबके मुख से यह आवाज निकले, हमारे ईष्ट आ गये। हमारे पूज्य आ गये। लक्ष्य पक्का है ना! पक्का है लक्ष्य, करना ही है? या देखेंगे, प्लैन बनायेंगे! करना ही है, प्लैन क्या, करना ही है। अभी सभी इन्तजार कर रहें हैं। अभी इन्हों का इन्तजार समाप्त करें प्रत्यक्ष हाने का इन्तजाम करें, देखे प्रकृति भी अभी कितनी तंग हो रही है। तो प्रकृति को भी शान्त बना दो। आप प्रत्यक्ष हो जायेंगे तो विश्व शान्ति स्वत: हो जायेगी।

15. (**डबल विदेशी**) शारीरिक एक्सरसाइज तो सब करते हैं लेकिन मन की एक्सरसाइज अभी-अभी ब्राह्मण, ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता। यह मन्सा ड्रिल का अभ्यास सदा करते रहो।
16. शुद्ध भोजन, मन का शुद्ध संकल्प। अगर व्यर्थ संकल्प, निगेटिव संकल्प चलता है तो यह मन का अशुद्ध भोजन है। तो मन में सदा शुद्ध संकल्प रहे।

Feb 25, 2025

घर का गेट खोलने के लिए बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा देह-अभिमान के मैं का त्याग करो, बर्थ डे पर दृढ़ता द्वारा कहना और करना एक कर सफलतामूर्त बनो

1. दरवाजा खोलने के लिए, बेहद के वैरागी बन वेस्ट संकल्प और वेस्ट समय दोनों को मिलकर जल्दी से जल्दी त्याग करना अर्थात् बेहद के वैरागी बनना क्योंकि बापदादा ने देखा है कि सबसे बड़ा विघ्न देह अभिमान है। इस देह अभिमान को त्यागना चलते-फिरते देही अभिमानी बनना, यही बेहद का वैराग्य है।
2. एक मैं है कामन, मैं आत्मा हूँ और यह मेरा शरीर है। दूसरा महीन मैं, जो सुनाया मैंने यह किया, मैं यह कर सकता हूँ, मैं ही ठीक हूँ, यह महीन मैं इसको खत्म करना है। यह देह अभिमान इस रूप में आता है। तो आज बापदादा ने यह महीन मैं जो कभी बाप की विशेषता को भी मेरा मानकर 'मैं' का भान रखते हैं, इसको समाप्त करना।
3. बर्थ डे पर आये हो बाप के, तो कोई सौगात तो देंगे ना! तो बाप को और सौगात नहीं चाहिए, यह महीन मैंपन, यही बाप कहते हैं आज के जन्मदिन पर बाप को सौगात दे दो। दे सकते हो? देना है? है हिम्मत?
4. कई बच्चे कहते हैं बाबा हम चाहते नहीं हैं लेकिन क्या करें वापस आ जाता है। कारण क्या? दृढ़ता कम है, दृढ़ता को यूज़ करो। संकल्प करते हो लेकिन एक है संकल्प करना, दूसरा है दृढ़ संकल्प करना। तो बार-बार किये हुए संकल्प में दृढ़ता लाना, यह अटेन्शन कम है। दृढ़ता सफलता की चाबी है।
5. सारे कल्प में बाप बच्चों का एक समय जन्म यह इसी बर्थ डे की विशेषता है। तो आज के दिन बाप यही चाहते हैं कि हर बच्चा आज अपने दिल में दृढ़ता को लाके यह दृढ़ संकल्प करे कि हमें व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय, क्योंकि अगर सारे दिन को अटेन्शन से चेक करो तो बीच-बीच में समय

और संकल्प व्यर्थ जाता है। बापदादा तो सबका रजिस्टर देखते हैं ना! उसको बचाना अर्थात् समाप्ति का समय समीप लाना। तैयार हो?

6. कुछ भी हो जाए त्याग तो त्याग। यह त्याग नहीं लेकिन भाग्य है। तो आज का दिन अगर सही हाथ उठाया तो महत्व का दिन है ना! अभी से आपके चेहरे पर व्यर्थ की समाप्ति और सदा स्मृति स्वरूप की झलक चेहरे और चलन में आनी चाहिए।
7. मेरा बाबा, मेरा बाबा दिल में समाते, कहना अलग ची ज़ है लेकिन दिल में समाना, दिल की बात कभी भूलती नहीं है।
8. तो अभी संकल्प को अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाने के बाद यह रोज़ स्मृति में लाना और सारे दिन में बीच-बीच में चेक करना। बापदादा टाइम फिक्स नहीं करते लेकिन आप अपना टाइम फिक्स करो। बीच-बीच में चेक करना तो जो बापदादा के आगे बर्थ डे पर वायदा किया वह वायदा निभा रहे हैं?
9. (**राजस्थान और तमिलनाडु**) तीव्र पुरूषार्थी भव।
10. (**डबल विदेशी**) अभी तीव्र पुरूषार्थी का ऐसे सैम्पुल बनो, जो बापदादा आपका दृष्टान्त देकरके औरों को भी उमंग-उल्हास में लाये। उम्मीदवार हो। जो संकल्प करो वह कर सकते हो।
11. एक-एक बच्चे को सदा तीव्र पुरूषार्थी बन औरों को भी तीव्र पुरूषार्थी अपने संग से भी बना सकते हैं। किसी भी आत्मा को कोई सहयोग चाहिए वह दिल से सहयोग दे तीव्र पुरूषार्थी बनाते चलो। हर स्थान तीव्र पुरूषार्थी स्थान हो। यही संकल्प हर एक रखे और फिर बापदादा इसकी रिजल्ट देखेंगे।
12. हर एक सेन्टर सन्तुष्टमणियों का सेन्टर हो।
13. रिटर्न जरनी है। उसके लिए जैसे ब्रह्मा बाप फरिश्ता है, ऐसे फॉलो फादर। साकार में होते फरिश्ता, जिसको भी देखो फरिश्ता ही फरिश्ता, तब गेट खुल जायेगा।

March 09, 2025

मन्सा द्वारा प्रकृति को सतोगुणी बनाने की सेवा करो शुभ भावना शुभकामना रख संस्कार मिलन की रास करो और अपने पुराने संस्कारों को जलाकर प्रभु के संग का रंग लगाते सच्ची होली मनाओ

1. बाप के साथ रहने से बाप को कम्बाइन्ड बनाने से डबल पवित्र बन जाते हो।
2. आप सदा उमंग और उत्साह में रहते हो। रहते हो ना! उमंग- उत्साह में रहते हो? हाथ उठाओ। रहते हो कभी कभी या सदा? सदा शब्द को अण्डरलाइन करते हो ना!

3. आपको बापदादा का डायरेक्शन है होली अर्थात् बीती सो बीती। यह भी कहते हैं हो ली लेकिन अर्थ को प्रैक्टिकल में नहीं ला सकते। आप सब हो ली अर्थात् बीती सो बीती करते हो। करते हो ना!
4. अगर सदा प्रभु रंग में रंगे हुए हो अर्थात् बाप को सदा का साथी बनाके रहते हो तो संगमयुग के एक-एक संकल्प और समय माना एक-एक मिनट को सफल कर सकते हो। तो चेक करो अपने को कि एक- एक मिनट एक-एक संकल्प सफल होता है? या व्यर्थ भी जाता है?
5. एक मिनट नहीं 21 जन्म का कनेक्शन हर मिनट और हर संकल्प का है। इतनी वैल्यु है। तो अपनी दिल में सोचो कि इतनी वैल्यु सदा रहती है! इस संगम के समय के लिए कहा हुआ है - "अब नहीं तो कब नहीं।" इतनी वैल्यु सदा स्मृति में रहे।
6. बापदादा सदा ही इशारा देते हैं कि अपने मन के शुभ सतोगुणी संकल्प द्वारा प्रकृति को भी सतोगुणी बनाते रहो। तो वह मन्सा सेवा याद रहती है? जैसे मायाजीत बनने का अटेन्शन रखते हो, ऐसे ही प्रकृति जीत भी बनना है।
7. बापदादा ने तो बहुत समय से अचानक का पाठ पढ़ाया है। लेकिन अभी प्रत्यक्ष रूप में देख करके अभी अपना काम शुरू करो। घबराओ नहीं। पेपर तो आने ही हैं लेकिन आपका डबल काम है। एक तो निर्भय होके सामना करो दूसरा आप प्रभु के संग में रंग लगे हुए हो तो जो परमात्मा के संग के रंग में प्राप्त किया है वह अपने भाई बहिनों को भक्तों को खूब प्यार से दिल से बांटो।
8. आप परमात्म बच्चों को अभी दु:खियों का सहारा बनना है। उन्हों को शुभ भावना शुभ कामना द्वारा बाप द्वारा प्राप्त हुई किरणों द्वारा सहारा बनो। फिर भी आपका परिवार है ना!
9. जैसे ट्राफिक कन्ट्रोल अमृतवेला निश्चित है तो करते हो ना। ऐसे अपने कार्य प्रमाण यह मन्सा सेवा भी अभी के समय प्रमाण अति आवश्यक है। तो समय निकाला े रहमदिल बनो। कल्याणकारी बनो। आपका स्वमान क्या है? विश्व कल्याणकारी।
10. तो रहम आता है? कि हो जायेगा? इसमें अलबेले नहीं बनना क्योंकि जिन्हों को आप सकाश देंगे वही आपके भक्त बनेंगे इसलिए क्या करना है? है अटेन्शन है?
11. थोड़ा अपने को सावधान करो दु:खियों का सहारा बनना ही है तो आवाज सुनने आयेगी।
12. बापदादा ने पहले भी कहा था तो अपना सदा यह चेक करो कि मुझे ब्राह्मण परिवार के बीच संस्कार मिलन की रास करनी है। हर एक अपने लिए क्या दृढ़ संकल्प है वह फिक्स करके लिखना। कितना समय लगेगा जो ब्राह्मण परिवार में कहाँ भी कभी भी संस्कार अपना कार्य नहीं करे। चाहे मेरा संस्कार चाहे दूसरे का संस्कार भी मेरे को प्रभाव नहीं डाले। यह डेट फिक्स हो सकती है?

13. तो एक दो को सहयोगी बन शुभ भावना शुभ कामना की दृष्टि वृत्ति स्मृति रखने से यह रास होना कोई बड़ी बात नहीं। इस पर जो बहुत अच्छा नम्बर लेगा डेट पर प्रैक्टिकल करके दिखायेगा उनको न्यारा और प्यारा इनाम मिलेगा।
14. (**पहले बारी**) जो बाप के महावाक्य हैं उस श्रीमत पर चलते रहेंगे तो श्रीमत आपको श्रेष्ठ डिवीजन में ला सकती है लायेगी। इतने सारे परिवार द्वारा आप सभी को वरदान तो बाप का होता है लेकिन शुभ भावना शुभ कामना है कि आप जितना आगे बढ़ने चाहो उतना बढ़ सकते हो।
15. आज होली पर वरदान लिया वह कभी भी बाप से अलग अकेले नहीं होना है। साथ है साथ चलेंगे और फिर साथ में ब्रह्मा बाप के साथ राज्य करेंगे। तो साथ शब्द निभाना है। एक सेकण्ड भी साथ नहीं छोड़ना है। साथ रहेंगे साथ चलेंगे अभी यही स्मृति सदा याद रखना।

Mar 21, 2025

पूर्वज और पूज्य के स्वमान में रह मन्सा द्वारा सर्व की पालना करो, पूरे वृक्ष को सकाश दो

1. आप इस सारे वृक्ष के टाल टालियां वा पत्तों की पालना करने वाले, सकाश देने वाले पूर्वज हो। पूर्वज के साथ पूज्य भी हो। तना द्वारा लास्ट पत्ते को भी सकाश मिलती है। तो अपने को सारे वृक्ष को सकाश देने वाले अनुभव करते हो? नशा रहता है कि हम पूर्वज सर्व आत्माओं रूपी टाल टालियां या पत्तों को सकाश दे रहे हैं!
2. आजकल देखते हो कि सभी आत्मायें दु:खी हैं, पुकार रही हैं, अपने-अपने देवी देवताओं को, आओ हमारी रक्षा करो। हमें शान्ति दो, हमें शक्ति दो। ओ क्षमा के सागर पूर्वज हमें पालना दो। तो यह आवाज आप पूर्वज आत्माओं के कानों में सुनाई दे रहा है? अनुभव करते हो कि हम ही पूर्वज हैं?
3. तो जितना आप अपने पूर्वज के नशे में रहेंगे उतना ही आप द्वारा उन्हों की पालना होगी। तो जैसे बाप ने आप सभी बच्चों की भिन्न-भिन्न शक्तियों से पालना की है वैसे अभी आपका कार्य है सारे वृक्ष के टाल टालियों और पत्तों की पालना करना। ऐसा उमंग आप पूर्वज आत्माओं को आता है? नशा है पूज्य भी हो?
4. तो आजकल बापदादा आप सभी बच्चों को जो आपका स्वमान है, बाप समान सम्पन्न सम्पूर्ण बनने का, वही रूप देखने चाहते हैं। उसके लिए एक बात बच्चों को ध्यान में रखनी है, बापदादा ने देखा कि सभी

बच्चे पुरूषार्थ बहुत अच्छा भी करते हैं लेकिन 'सदा' शब्द हर एक को अपने पुरूषार्थ में एड करना है। अटेन्शन देना है।

5. बाप फिर बच्चों से प्रश्न पूछते हैं कि समय को समीप लाने वाले कौन हैं? अकेला बाप लायेगा? तो बाप बच्चों से पूछते हैं कि: समय को समीप लाने वाले बच्चे आप ही डेट फिक्स करो। किसको डेट फिक्स करनी है? बाप को या बाप के साथ आप और बाप दोनों को?
6. बापदादा तीव्रगति में आगे बढ़ने के लिए बच्चों को विशेष अटेन्शन दिलाते हैं कि सिर्फ एक वाचा की सेवा नहीं, सेवा करते हो तो एक ही समय पर तीन सेवायें इकट्ठीकरो - मनसा द्वारा सकाश दो, वाचा द्वारा ज्ञान दो और कर्मणा अर्थात् अपने सम्पर्क द्वारा, सम्बन्ध द्वारा, चेहरे द्वारा ऐसी सेवा करो जो उसका भी प्रभाव साथ-साथ सेवा में हो। तो एक समय पर तीनों सेवा कर सकते हो? कर सकते हो? चेक करते हो कि जिस समय वाणी की सर्विस करते उस समय मन्सा द्वारा और कर्मणा अर्थात् सम्पर्क-सम्बन्ध द्वारा भी सेवा हो रही है! होती है साथ-साथ?
7. सेवा तो करते हैं लेकिन सेवा में साथ-साथ अपने में और साथियों में सन्तुष्टता क्योंकि सेवा का फल है सन्तुष्टता वा खुशी।
8. सेवा के सफलता की तीन बातें विशेष सुनाई थी, याद होगी। पहला नम्बर सेवा अर्थात् निमित्त भाव। दूसरा - निर्माण भावना। तीसरा - निर्मल वाणी। भाव, भावना और स्वभाव। यह सभी साथ-साथ सेवा में है तो स्वयं भी सन्तुष्ट और साथी भी सन्तुष्ट और जिन्हों की सेवा की वह भी आगे बढ़ते जायें।
9. एक बात बापदादा इशारा देते हैं कि चलते फिरते, संगठन में भी रहते हो, कोई न कोई साथ में सेवा में होता ही है, तो एक दो को आत्मा के रूप में देखो। तो बाप कहते हैं कि आज से किसी को भी एक तो आत्मा रूप में देखो लेकिन आत्मा के जो ओरीज़्नल संस्कार हैं उस रूप में देखो। तो कभी भी आपस में जो कभी कभी बातें हो जाती हैं, वह नहीं होंगी।
10. ब्राह्मण परिवार का विशेष कार्य है दुआ देना, दुआ लेना।
11. आत्मा कहा तो आत्मा को निजी संस्कार आत्मा के जो हैं उस निजी संस्कार के रूप में, सम्बन्ध में भी आओ और दृष्टि में भी उसी दृष्टि में देखो तो यह जो विघ्न पड़ते हैं जिसके कारण पुरूषार्थ में तीव्रता नहीं आती है, तो अभी वृत्ति बदलेंगे, दृष्टि बदलेंगे तो बातें समाप्त हो जायेंगी।
12. आप ब्राह्मण परिवार का एक एक का फर्ज है शुभ भावना, शुभ कामना देना और शुभ भावना, शुभ कामना लेना। उस संस्कार से देखो और चलो। बापदादा हर एक बच्चे में यह परिवर्तन देखने चाहते हैं। हो सकता है? हो सकता है? हाथ उठाओ।

13. रोज़ रात को सोने के पहले बापदादा को गुडनाइट करने के पहले अपने सारे दिन का पोतामेल देना। अच्छा किया या बुरा किया?जो भी किया वह पोतामेल देके और अपने बुद्धि को खाली करके गुडनाइट करना। बाप से भी और बाप की याद में ही आप भी सो जाना। आपकी नींद बहुत अच्छी होगी। पहले खाली करना अपने को, बुद्धि में कोई बात नहीं रखना, बाप के रूप में सारा पोतामेल सच्ची दिल का दे दिया तो आपको धर्मराजपुरी में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। सच्ची दिल पर साहेब राजी हो जायेगा।
14. दु:खी को खुशी की लहर पहुंचा सकते हो। चिल्लाने वाले को, आपके ही भक्त आपको ही पुकार रहे हैं। तो अभी मन्सा सेवा को बढ़ाओ। और जितना बिजी रहेंगे ना उतना निर्विघ्न रहेंगे। कर सकते हो ना!
15. मन्सा सेवा करना जानते हो ना! अच्छा नियम पूर्वक करते हैं या कभी कभी? अगर कभी कभी करते हैं तो उसको रेग्युलर करो और अगर थोड़ी करते हैं उसको और बढ़ाओ।
16. चाहे पुजारी बनेंगे चाहे राज्य अधिकारी बनेंगे दोनों का आधार अभी की सेवा, अभी की अवस्था, अभी का बोल, अभी का सम्बन्ध सम्पर्क है। इसीलिए अगले बारी जब आयें, सबका रिजल्ट लेंगे। जितनी परसेन्ट अभी है, उससे बढ़नी चाहिए।
17. करना है तो अभी करो। कभी नहीं। तुरत दान महापुण्य।
18. बापदादा यही वरदान देते हैं कि थोड़े समय में फास्ट पुरूषार्थ तीव्र पुरूषार्थ कर आगे बढ़ सकते हो। अगर हर समय अटेन्शन रखेंगे, परिवर्तन करने का और सारे दिन में अपने पढ़ाई और प्राप्ति इकट्ठीकरते रहेंगे तो आप भी आगे बढ़ सकते हो। चांस है।
19. जितना हो सके उतना अपने चार ही सबजेक्ट में, पढ़ाई में अटेन्शन देते रहना।
20. तो बाप की तो एक एक बच्चे में यही आशा है कि हर एक बच्चा आगे से आगे जाये और अपना स्वराज्य और बापदादा के दिल का तख्त ले।
21. (**डबल विदेशी**) तो ब्राह्मण परिवार दुनिया के लिए विश्व परिवर्तक है। तो परिवर्तक परिवर्तन नहीं करेंगे तो विश्व का परिवर्तन कैसे होगा! जिम्मेवारी समझो। अलबेलापन छोड़ो। हो जायेगा, हो जायेगा नहीं। करना ही है।
22. समय आप ब्राह्मणों के रोकने से रूका हुआ है। समय को समीप लाने वाले आप हो। तो तीव्र पुरूषार्थ करो। दृढ़ संकल्प करो तो हो जायेंगे। रोज़ यह गीत याद करो अब घर चलना है।